Atmaj

I2OR

Academic Research Journal

An International Peer-Reviewed Research Journal

ISSN: 2348 - 9456

Impact Factor 5.880

Volume-21, Issue -9, Jan.-June - 2024

Editor-In-Chief

Dr. Dilkhush Patel

Scanned with OKEN Scanner

Content of the Table

Sr. No.	Title of the Paper	Author	Page No.
1	वर्तमान की पर्यावरणीय समस्याओं का संस्कृत वांग्मय में समाधान।	Dr.Hansaben Balabhai Gujariya	1
2	આર્ટ્સ, કોમર્સ અને સાયન્સ વિભાગની વિદ્યાર્થીનીઓમાં સામાજિક સમાયોજન અને માનસિક સ્વાસ્થ્યનો અભ્યાસ	ભાવના સી. વાંઝા	8
3	तुलनात्मक साहित्य पर आलोचनात्मक प्रतिक्रियाएँ	प्रा. डॉ.मुकेशकुमार ए.कांजिया	16
4	માનસિક સ્વાસ્થ્ય માટે રમતગમત, શારીરિક શિક્ષણ અને યોગની ભૂમિકા	Dr. Nileshbhai R. Patel	22
5	India's Journey to Becoming a Developed Country: VIKSIT BHARAT - 2047	RENUKA B. CHAVDA	27
6	હોસ્પિટલના સ્ત્રી કર્મચારીઓનો વ્યાવસાયિક મનોભારનો અભ્યાસ	Dr MEGHANA R.PATEL	31
7	NEP 2020: Physical Education an Overview	PUJARA RUTVI HITESHBHAI	35
8	Social Commerce: A Comprehensive Review of Social Media's Role in E -Commerce	Prashant Kachhela	38
9	Top Ten Innovative Methods in Teaching English Language	Ms. Manisha Oza	43
10	ભારતીય સંસ્કૃતિ : વિવિધતામાં એકતા	ડૉ. મીનાક્ષીબેન આર. પટેલ	48
11	Effect of Pranayama and Meditation Training on Anxiety of College Student	Dr. Rachnaben N. Patel	51
12	'વસુધૈવ કુટુમ્બકમ' - પ્રાચીન ભારતનો વારસો	DR. POOJABEN HARENDRABHAI THAKER	54
13	Contribution of Tourism Industry in Indian Economy: an Analysis	Dr. Odedara Haja D.	57
14	Family Structures and Dynamics in the 21st Century: Trends, Challenges, and Implication	Dr. Tnuja R. Kalola	62
15	Strengthening Social Innovation Ecosystem through Business Management	Dr. Supriya Korgaokar	65
16	Value Build-up Through Sports and Physical Education	Dr. Tauseef I. Pathan	70
17	Youth Problem Among Adolescents: A Study with Reference to Educational Level, Gender and Residential Area.	DR.VARSHA V. DHOLARIYA	73
18	Karan Ghelo: Translating a Gujarati Classic of Love and Passion, Revange and Remorse	Anuja B Patel	77
19	A COMPARATIVE STUDY OF MENTAL HEALTH OF GOVERNMENT & PRIVATE TEACHER	Dr. Tejal B. Nasit	81
20	A Study of Literature Review on Goods and Services Tax (GST) in India	Pushpa Vaghela	84

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2348-9456
Impact Factor 5.88

21	[illegible]	[illegible]	[illegible]
22	[illegible]	[illegible]	[illegible]
23	[illegible]	[illegible]	[illegible]
24	[illegible]	[illegible]	[illegible]
25	[illegible]	[illegible]	[illegible]

Scanned with OKEN Scanner

Volume – 21 Issue – 9, Jan.– June - 2024

ISSN: 2348-9456
Impact Factor: 5.880

"महाप्राण निराला का हिंदी साहित्य में स्थान"

डॉ. मनीषा आर जोगीया,
आसिस्टंट प्रोफेसर, हिन्दी
सरकारी विनयन,वाणिज्य और विज्ञान कोलेज , खेरगाम, जिल्ला : नवसारी

जन्म 21 फ़रवरी, 1896 ई., मेदनीपुर बंगाल
मृत्यु- 15 अक्टूबर, 1961, प्रयाग

भारतीय साहित्य संसार का सर्वश्रेष्ठ साहित्य है। अनेक भाषाओने भारतभूमि को सजाने मे अपना योगदान दिया है । भारत की राजभाषा हिन्दी है, जो संसार का ताज है। हिन्दी में अनेक साहित्यकारो ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है।आदिकाल से लेकर आधुनिक काल तक हिन्दी साहित्यकारो, कवियों ने राजभाषा को साहित्य के माध्यम से राजसिंहासन पर आसन्न किया है। आज हम आधुनिक काल के छायावाद के चार स्तंभो मे से एक महाप्राण निराला के विषय मे कुछ कहना चाहते है ।

निरालाजी का नाम हिन्दी साहित्याकाश में सुवर्णाक्षरो से लिखा गया है । महामानव ,महाप्राण जैसे बिरुदो से सम्मानित "निराला" अद्भूत व्यक्तित्व के स्वामी थे। इस महान साहित्यकार का जन्म बंगाल के मेदिनीपुर मे २१ फरवरी, १८९६ के दिन रामसहाय त्रिपाठी के घर हुआ था। बाल्यावस्था से ही संघर्ष शुरु हो गया, माता का देहावसान हुआ निराला की शिक्षा यहीं बंगाली माध्यम से शुरु हुई। हाईस्कूल पास करने के पश्चात् उन्होंने घर पर ही संस्कृत और अंग्रेज़ी साहित्य का अध्ययन किया। हाईस्कूल करने के पश्चात् वे लखनऊ और उसके बाद गढकोला (उन्नाव) आ गये। प्रारम्भ से ही रामचरितमानस उन्हें बहुत प्रिय था। वे हिन्दी, बंगला, अंग्रेज़ी और संस्कृत भाषा में निपुण थे और श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर से विशेष रुप से प्रभावित थे। मैट्रीकुलेशन कक्षा में पहुँचते-पहुँचते इनकी दार्शनिक रुचि का परिचय मिलने लगा। निराला स्वच्छन्द प्रकृति के थे और स्कूल में पढ़ने से अधिक उनकी रुचि घूमने, खेलने, तैरने और कुश्ती लड़ने इत्यादि में थी। संगीत में उनकी विशेष रुचि थी। अध्ययन में उनका विशेष मन नहीं लगता था। इस कारण उनके पिता कभी-कभी उनसे कठोर व्यवहार करते थे, जबकि उनके हृदय में अपने एकमात्र पुत्र के लिये विशेष स्नेह था। पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में निराला का विवाह मनोहरा देवी से हो गया। पं. रामदयाल की पुत्री मनोहरा देवी सुन्दर और शिक्षित थीं, उनको संगीत का अभ्यास भी था। इसके बाद अतिशीघ्र ही उन्होंने बंगला के बजाय हिन्दी में कविता लिखना शुरू कर दिया। बचपन के नैराश्य और एकाकी जीवन के पश्चात् उन्होंने कुछ वर्ष अपनी पत्नी के साथ सुख से बिताये, किन्तु यह सुख ज़्यादा दिनों तक नहीं टिका और उनकी पत्नी की मृत्यु उनकी 20 वर्ष की अवस्था में ही हो गयी। बाद में उनकी पुत्री जो कि विधवा थी, की भी मृत्यु हो गयी। वे आर्थिक विषमताओं से भी घिरे रहे। ऐसे समय में उन्होंने विभिन्न प्रकाशकों के साथ प्रूफ रीडर के रूप में काम किया, उन्होंने 'समन्वय' का भी सम्पादन किया। निराला प्रकृति और संस्कृति दोनों के अभिशापों को झेलते हुए अपनी सृजन यात्रा पर चलते रहे। यह आत्मिक शक्ति ही निराला जैसे लेखकों की विलक्षणता है।

वेदना सिर्फ उन्हें ही तोड़ पाती है, जिनके पास व्यक्तित्व नहीं होता। निराला की जिस कमाई का हम अभिनंदन

Scanned with OKEN Scanner

करते हैं, यह है, इनका व्यक्तित्व। अपने समय के संघर्षों से सूर्यकांत त्रिपाठी निराला में ही व्यक्तित्व दिखाई देता है अक्खड़ थे, स्वाभिमानी थे इन्हें मर जाना, या जीते जी मर जाना कबूल था, पर किसी के सामने गिड़गिड़ाना नहीं। चेतना को सब से ज्यादा पहचानती है। और कैदी सा, मुक्ति, निराला और मुक्तिबोध में कितनी सरसता है या कि मनोरंजन है। इन सबों में सुख और आनंद की सबसे ज्यादा छवियां निराला में ही मिलती हैं; क्योंकि वे एक पूर्ण व्य से अपना उनकी साधना पूर्ण व्यक्तित्व बनने की थी।

निराला जी एक कवि, उपन्यासकार, निबन्धकार और कहानीकार थे। उन्होंने कई रेखाचित्र भी बनाये। निराला जी बारे में कहा जाता है कि एक समय में वसन्त पर सैकड़ों कविताएं लिखना आम था, पर इस विषय पर सबसे श्रेष्ठ निराला ने ही लिखे हैं। उनके जीवन में अभाव ही अभाव रहे, पर उनकी आत्मा में वसंत की खुशबू रची बसी रही, इसीलि हिंदी जगत उन्हें 'महाप्राण' मानता है। निराला हमारे उन कालजयी कवियों में से हैं जिनके जीवन और कृतित्व के ब को जानने समझने की हमारी जिज्ञासा लगातार बनी रहती है। "निराला ने अपनी स्वतंत्र काव्यदृष्टि से भारती मानसिकता की गहरी जड़ों को समझकर युग-जीवन की विभिन्न समस्याओं को अपनी लम्बी कविताओं में संकेति और रेखांकित किया है।"(1)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का साहित्यिक विशेषताएं

आधुनिक चेतना के विद्रोहशील स्वरूप की सर्वाधिक और सबसे समर्थ अभिव्यक्ति निराला जी के काव्य में है बंगभूमि में जन्म होने के कारण बंगला भाषा और उसके आधुनिक चेतना से ओत-प्रोत साहित्य का इन्हें भली प्रका गहन अनुशीलन का अवसर मिला। बंगाल के धार्मिक महापुरुषों - श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द आदि ने भी इन्हें प्रभावित किया। विश्वकवि रवीन्द्रनाथ की काव्य प्रतिभा का अभिनंदन करते हुए इन्होंने अपने प्रारंभिक रचनाकाल में 'रवीन्द्र कविता कानन' की रचना की। किन्तु इनका व्यक्तित्व स्वयं महाप्राण था, इसीलिए ये सभी प्रभाव इनके भीतर पूर्णतः समाहित हो गए। बंगला भाषियों के बीच रहते हुए भी इन्होंने हिंदी का अभ्यास किया और हिंदी में ही साहित्य का सृजन आरंभ किया।

उनकी प्रमुख कृतियों में परिमल, अर्चना, सान्ध्य काकली, अपरा, गीतिका, आराधना, दो शरण, रामविराम, गीत गुंज, अणिमा, कुकुरमुत्ता शामिल है. उन्होंने अपने जीवन में काव्य, उपन्यास, निबंध, पुराण कथा, अनुवाद आदि की रचना की है. वे जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं. उन्होंने कहानियां, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं, निराला ने दो ही लंबी कविताएं लिखी, *तुलसीदास* और *राम की शक्तिपूजा* इन दोनों की जीवन कथा से निराला का एकात्म्य बहुत सहज था। तुलसीदास महाकवि थे, पर उनके जीवन में विषाद ही विषाद था। उनके जीवन में भक्ति रस की गंगा न बहती होती, तो वह भी पागल हो गए होते। निराला ने राम के जीवन का वह क्षण पकड़ा, जब वह हर तरह से असहाय और शक्ति की पूजा पर बैठे थे। छायावाद आंदोलन में इनके योगदान और अद्वितीय साहित्यिक लेखन विधा ने हिंदी भाषा के सबसे महत्वपूर्ण कवियों में से एक के रूप में इन्हें भी स्थान दिलाया। और इन्हें आधुनिक हिंदी साहित्य के अग्रदूतों में से एक माना जाता है और अक्सर इन्हें "निराला" कहा जाता है, जिसका अर्थ है- 'अद्वितीय'। निराजी का पूरा साहित्य ही अद्वितीय है, कुछ काव्य पंक्तियां एवं लोकप्रिय रचनाओं के अंश हम देख देखते है . निराला ने अपने आसपास के जगत को खुली आँखों से देखा इनकी 'भिक्षुक' कविता वर्तमान स्थिति के लिए जिम्मेदार व्यवस्था के प्रति एक गहरा सक्रिय आक्रोश व्यक्त करती है–

"वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलाकर हैं एक,
चल रहा लकुटिया टेक,
मुट्ठीभर दाने को-भूख मिटाने को
मुँह फटी पुरानी झोली को फैलाता

Scanned with OKEN Scanner

दो टूक कलेजे..."(2)

देश को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराने मे देश के कवियो का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस योगदान के लिए सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की रचना "जागो एक बार फिर..." को भुलाया नही जा सकता। ये कविता परिमल संग्रह से ली गई है। इस कविता मे निराला जी ने कही भी अंग्रेजो और भारत का नाम नही लिया। बावजूद इसके, निराला की इस कविता ने उस दौरान देश के युवाओ को जगाया और अंग्रेजो के खिलाफ आजादी का बिगुल फूंका। निराला जी इस कविता के जरिए कह रहे हैं, "ओ प्यारे देशवासियो, सभी तारे तुम लोगों को जगा-जगाकर थक गए हैं। सूर्य की रोशनी तुम्हारे दरवाजे पर खड़ी है, ये किरणे दरवाजा खोल रही हैं। उठो और जागो।"(3)

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला (Suryakant Tripathi Nirala) ने अपनी 'दान' कविता मे प्रकृति के प्रति प्रेम को दिखाया है। वही गोमती नदी के छोर पर प्रकृति की खूबसूरती का उन्होने बखूबी वर्णन किया है। इस काव्य के जरिए वे कहना चाहते हैं कि प्रकृति की सुंदरता की एक झलक पाने के लिए, कमल का फूल सूर्य की किरणे निकलते ही खिल गया। खुशबू से भरे कपड़ो को पहनकर हवा धीरे-धीरे बह रही है। जब हवा कानो को छूकर गुजरती है, तो काफी आनंद महसूस होता है। गोमती नदी की तुलना नायिका से की गई है, जिस प्रकार नदी मे कहीं-कहीं पानी कम होने से उसके छोर पतले व बड़े होते हैं, ये ठीक एक नायिका जैसे ही हैं। हवा के कारण धारा की हिलोरे नृत्य के समान दिख रही है। 'सरोज स्मृति' निरालाजी की अत्यंत संवेदनशील कविता है ,यह कविता दुःखों के पहाड़ के विस्फोट मे क्षत-विक्षत निराला की आत्मकरुणा का चित्र है जिसके रंगों को गहराई देने का काम अनेकानेक विषम सामाजिक सन्दर्भों ने किया है। "निराला ने आत्मकरुणा कथा को सार्वजनिक व्यथा-कथा बना दिया जो व्यक्तिगत संवेदन को सामाजिक संवेदन से जोड़ने की निराला की अद्भुत क्षमता का परिचय देती है।"(4) उन्होंने अपनी अभिव्यक्ति मे एक सरोज की ही नहीं अपितु हजारों लाखों सरोजो की कहानी कही है। जिनके अभाववश उनकी चिकित्सा का थोड़ा सा भी प्रबंध नहीं करा पाते वे अपने जीवन की असहाय एवं निरर्थकता पर गहरा शोक व्यक्त करते हैं-

"धन्ये, मैं पिता निरर्थक था,
कुछ भी तेरे हित न कर सका!
जाना तो अर्थागमोपाय,
पर रहा सदा संकुचित-काय
लख कर अनर्थ आर्थिक पथ पर
हारता रहा मैं स्वार्थ-समर...!"[5]

इस काव्य में आप उनके करुणा भाव को महसूस कर सकते हैं। जब आप इस पूरे काव्य को पढ़ेंगे, तब आप देखेंगे कि उन्होंने बेटी के बचपन से लेकर मृत्यु तक की यादों को शब्दों के ज़रिए इसमे पिरोया है। इस काव्य मे निराला जी काफी दुखी हैं और अपनी बेटी की शादी के समय को याद करते हैं।

निराला जी की स्वच्छंदतावादी काव्य कला का प्रमुख स्वरुप इनके "परिमल" काव्य-संग्रह की रचनाओ मे दृष्टिगत होता है। इसमे हमे सौन्दर्य चेतना के मानवीय, प्रकृति परक और आध्यात्मिक सभी रूप देखने को मिलते हैं। अतीत के भी भावना और कल्पना से अनुरञ्जित अनेक भव्य और प्रेरणाप्रद चित्र हैं। उनका सहज संवेदनशील हृदय समाज के अनेक पीड़ितों और प्रपीड़ितों के प्रति सहानुभूति से परिपूर्ण हो उठा हैं। इसी अनुभूति को लेकर इनका विद्रोही मन सजग हो उठा है और बड़ी ओजस्वी शब्दावली मे व्यक्ति, समाज और संपूर्ण देश को विप्लव के लिए आह्वान करने लगा है।

निराला जी ने अपने विद्रोहशील व्यक्तित्व को लेकर मन के प्रबल भावावेग को जब वाणी दी तो छंद के बंधन सहज ही विच्छिन्न हो गए और मुक्त छंद का आविर्भाव हुआ। कविता का यह स्वच्छंद स्वरूप इनकी प्रथम रचना 'जुही की कली' से ही दृष्टव्य है। साहित्य का स्वच्छंदतावादी संविधान सूर्यकांत त्रिपाठी

Scanned with OKEN Scanner

ISSN: 2348-9456
Impact Factor: 5.880

निराला जी की रचनाओं में ही सबसे सशक्त रूप में प्रकट हुआ है। स्वच्छंदतावाद या छायावाद की मूलभूत प्रवृत्ति आत्मानुभूति के अनीश्वर स्पर्श में अलंकृत भाषा में अभिव्यक्त है जो मुक्त छंद के अतिरिक्त कभी-कभी गीत रूप भी ग्रहण करती है।

बहुमुखीप्रतिभासम्पन्न, यशस्वी, साहित्य के परशुराम,क्रांतिकारी कवि निरालाजी की साहित्य साधना देश,समाजोपयोगी है ।प्रेम,शृंगार,क्रांति,राष्ट्र गौरव तथा मानवीयता जैसे तत्व निराला की कविताओं में एक उदात्त भावभूमि देखने को मिलती है । निराला प्रयोगधर्मी कवि थे। इसी कारण उन्होंने काव्य जगत को भाव पक्ष शिल्प दोनों क्षेत्र में नवीनता प्रदान की । बहुत ही सम्माननीय पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया था और वह था पद्मभूषण अवार्ड से।

संदर्भ :

1. विनोदकुमार जायसवाल : *निराला की लम्बी कविताएँ एकअध्ययन* ,भारतीय ग्रन्थ निकेतन, नई दिल्ली, 1992,पृ. 66
2. वही, पृ.35
3. "जागो फिर एकबार" - निराला
4. विनोदकुमारजायसवाल: *निरालाकीलम्बीकविताएँएकअध्ययन*,भारतीय ग्रन्थ निकेतन, नई दिल्ली,1992,पृ.128
5. वही, पृ.128
6. हिन्दी साहित्य का इतिहास -आ. रामचंद्र शुक्ल
7. भिक्षुक(काव्य) - निराला
8. जागो फिर एक बार - निराला
9. बच्चन:*क्रांतिकारी कवि निराला*, विश्वविद्यालयप्रकाशन,वाराणसी,पांचवांसंस्करण 2003,
10. रेखा खरे:*निराला की कविताएँ और काव्यभाषा*,लोकभारती प्रकाशन,दूसरा संस्करण

ternational Peer-Reviewed Referred Journal

Ayudh

t Factor : 4.9

ISSN - 2321 : 2160

Vol-5

al Issue

February - 2023

A Special Issue on Conference Proceedings

esearch & Research Methodology

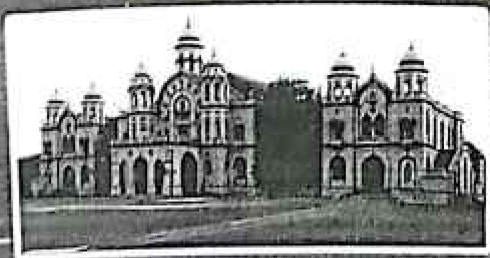

Organized by
Bahauddin Govt. Arts College – Junagadh &
Dharmendrasinhji Arts College – Rajkot
In Collaboration with
Ayudh Publication – Bhavnagar

Held on 11th February, 2023

Guest Editors

Dr. Arunendrasinh Rathod
Dr. Bhavesh Kachhadiya
Dr. P. V. Barasia
Dr. Jiten Parmar

Scanned with OKEN Scanner

INDEX

1. યોગ તાલીમ અને મનોરંજનાત્મક રમતો દ્વારા વિદ્યાર્થીઓના સ્વ-ખ્યાલ પર થતી અસરનો અભ્યાસ
   કમલેશ ડી. જાદવ & ડૉ. મીનાબેન એમ. પટેલ 1
2. મનોવિજ્ઞાનમાં સંશોધન અને સંશોધન પદ્ધતિશાસ્ત્ર
   Dr. Kamlesh N. Parmar ....
3. RESEARCH METHODOLOGY IN THE LANGUAGES AND LITERATURES
   Prof. Karshanbhai D. Pithiya 11
4. બુદ્ધિ અને પ્રજ્ઞા : એક વિશ્લેષણાત્મક અભ્યાસ
   કેતનકુમાર અશોકભાઈ ચાવડા ....
5. પાયલોટ અભ્યાસ
   KHUMRAJBHAI KANTILAL MEHTA 24
6. પંચાયતીરાજમાં ગ્રામ પંચાયતની ભૂમિકા, જવાબદારી અને અસરકારકતા
   ખુશબુ એ. ડીમાણીયા ....
7. શૈક્ષણિક સંશોધનમાં આંકડાશાસ્ત્રીય પ્રયુક્તિઓ
   Khyati Chandreshbhai Vyas 34
8. हिन्दी आलोचना का सैद्धान्तिक चिंतन
   डॉ. किरणबहन आ. डांडिया ....
9. शोकः श्लोकत्वमागतः ॥
   પ્રા.ડૉ. કીર્તિસિંહ બી. ગોહિલ ....
10. Value Education (મૂલ્યશિક્ષણ)
    Kishansinh Jaysinhbhai Dodia ....
11. સાહિત્યમાં સંશોધન અને સંશોધન પદ્ધતિ
    કૃપાલી ડી. કામળિયા ....
12. Research Methodology in Psychology
    Dr. M. P. Maheta 63
13. જૂનાગઢ જીલ્લાના ધોરણ-૧૦ અને ધોરણ-૧૨ ના વિદ્યાર્થીઓના પરીક્ષા અંગેના મનોવલણોનો એક અભ્યાસ
    Miss Mahetabbanu Javidhusen Husaini ....
14. Research Methodologies in the subjects of social sciences - Psychology Action Research
    Manishkumar D. Trivedi ....
15. कबीर एवं तुलसी का तुलनात्मक अध्ययन : वर्तमान संदर्भ में
    Dr. MANISHA R. JOGIYA ....
16. મનોવિજ્ઞાનમાં વિવિધ સંશોધન પદ્ધતિ શાસ્ત્રનો ઉપયોગ
    ડૉ. મનોજકુમાર એલ. પરમાર ....
17. EFFECT OF SWISS BALL TRAINING ON STATIC MUSCULAR STRENGTH AND MUSCULAR ENDURANCE
    Mr. Manoj J. Shinde & Dr. Nimeshkumar D. Chaudhari ....

Scanned with OKEN Scanner

18. સંયુક્ત અને વિભક્ત કુટુંબના સ્ત્રી-પુરૂષોના સ્ત્રીઓ પ્રત્યેના મનોવલણોનો મનોવૈજ્ઞાનિક અભ્યાસ
ડૉ.મયુર વી. બમ્મર 86

19. A STUDY OF INTELLIGENCE IN JUDO AND WRESTLING GIRLS PLAYERS
Dr. Mayuri C. Patel 92

20. Teacher Education : An analysis
Miraba Dhadhal 95

21. સાહિત્ય સંશોધનની તુલનાત્મક પધ્ધતિ: એક અભ્યાસ
ડૉ. મીનાક્ષીબેન આર. પટેલ 99

22. हस्तप्रत अनुसन्धान के व्यवहारू उपाय
निलमबेन कल्याणभाई सोनाणी 104

23. ગુજરાતી સાહિત્યમાં સંશોધન પ્રવૃતિ
ડૉ. રાજેશ એમ. ડુપારેલિયા 106

24. LEGAL RESEARCH METHODOLOGY
Dr. Sanjaykumar G. Dhanani 109

25. પ્રભાસપાટણ ક્ષેત્રના પ્રવાસન સ્થળો
મિતલબેન વરજાંગભાઈ મોરી 116

Ayudh
Publication
Since 2013

Scanned with OKEN Scanner

कबीर एवं तुलसी का तुलनात्मक अध्ययन : वर्तमान संदर्भ में

Dr. MANISHA R. JOGIYA
GOVERNMENT ARTS , COMMERCE AND
SCIENCE COLLEGE, KHERGAM

यह एक उद्देश्यपूर्ण बौद्धिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा किसी सैद्धांतिक अथवा व्यावहारिक समस्या का समाधान किया जाता तथा समस्याओ के समाधान हेतु विशिष्ट उपकरणों तथा प्रक्रियाओं का प्रयोग किया जाता है।इस प्रक्रिया में आंकड़ो से जानकारी एकत्रित की जाती है जो प्राथमिक अथवा माध्यमिक स्रोतो से एकत्र किए जाते है।

'शोध' अंग्रेजी शब्द रिसर्च का पर्याय है , 'पुन: खोज' नही अपितु गहन खोज है।अनुसंधान पद्धति एक विशिष्ट या तकनीक है।जिसका उपयोग किसी विषय के बारे में जानकारी की पहचान चयन प्रक्रिया और विश्लेषण के लिए किया जाता है।शोध मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है।तथा शोध जिज्ञासा मूल प्रवृति की संतुष्टि करता है।विशेष रूप से तथ्यो की खोज और व्याख्या के उद्देश्यसेजांच या प्रयोग ,नए तथ्यों के आलोक में स्वीकृत सिद्धांतोयाकानूनों का संशोधन,या ऐसे नए या संशोधित सिद्धांतों या कानूनों का व्यावहारिक अनुप्रयोग।किसी भी क्षेत्र में शोध करने के लिए विभिन्न तरीको का प्रयोग किया जाता है।अभी हम चर्चा करेंगे - तुलनात्मक शोधपद्धति की. इस पद्धति के अंतर्गत एक ही भाषा तथा दो या उससे अधिक भिन्न भाषा के समान कवियों अथवा लेखकों , कृतियो और प्रवृतियों , योगदान आदि की आपसी तुलना करके अध्ययन किया जाता है . जैसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल और तथा हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचनात्मक कृतियो का तुलनात्मक अध्ययन हिन्दी साहित्य का इतिहास बहुत पुराना है . हिन्दी साहित्य का द्वितीय चरण भक्तिकाल के नाम से जाना जाताहै। भक्ति काल को स्वर्णयुग के नाम से जाना जाता है। इस युगमे दो धाराएं चली निर्गुणधारा और सगुणधारा। निर्गुणधारा में संत काव्य धारा व सूफी काव्य धारा शामिल थी। स गुणधारा में रामकाव्यधा व कृष्णकाव्यधारा शामिल थी। रामकाव्यधारा (सगुण काव्यधारा) के प्रवर्तक संत तुलसीदास और (निर्गुण काव्यधारा) के महात्मा कबीरदास थे।दोनों युग प्रवर्तक एवं चिंतक के रूप में हमारे सामने आते है।कबीरदास के बारे में कहे तो निर्गुण काव्यधारा के इस फक्कड कवि ने सहज समाधि का मार्ग दिखा दिया।निष्काम भाव से मनुष्य द्वारा संपादित संपूर्ण क्रियाओं को सहज साधना या सहज समाधि के भीतर स्वीकार कर भक्ति को सबके लिए सुगम बना दिया है ।महात्मा कबीर और संत तुलसीदास उत्तर भारतीय भक्ति आंदोलन के दो सर्वाधिक महत्वपूर्णऔर प्रखर भक्त कवि रहे है।निर्गुण काव्यधारा के महात्मा कबीरदास (१३९८-१५१८ ई) यदि भक्तिकाल के आरंभिक महाकवि थे तो संत तुलसीदास(१५३२-१६२३ ई) उसके लगभग अंतिम महान कवि ।दोनों कवियों का निवास काशी रहा है,कबीरदास की मृत्यु के १४ वर्ष बाद पैदा होनेवाले तुलसीदास के समक्ष कबीरदास की चुनौतिया मूर्तिमान रही है ।दोनो (संत एवं भक्त) नेंअपनी प्रतिभा के बल पर पाखंड का विरोध किया।कबीर का शब्दिकअर्थ होता है 'महान',कबीर की एक ईश्वर मे आस्था थी,जो न मनुष्य है और न ही ब्रह्मचारी ,न ही परमात्मा,न योगी है।कबीर की विलक्षण प्रतिभा है उनकी सहज वाणी और व्यक्तित्व।कबीसाहेव ने जो "सहा" वही लिखा..जिस व्यक्ति को मारने का प्रयत्न हुआ,उसकी वाणी में प्रतिशोध की एक बूंद भी नही दिखती है,नाही प्रशंसा का भाव दिखाई देता है ।तुलसीदास तथा कबीरदास का समाज मुख्यत: दो वर्ग समुदायो में विभक्त था. एक और मुट्ठीभर राजा- महाराजा और उनके क्रियाकलापों से जुडे हुए लोगों का वर्ग या तो दूसरी ओर किसान,मजदूर और कारीगरों का विशाल समुदाय था।कबीर ब्राह्मण वंश से उत्पन्न उपभोक्ता वर्ग की वर्णाश्रमधर्मी चेतना से जुडे हुए थे ।वैसे तुलसीदास भी आम जनता की सामाजिक-धार्मिक मुक्ति के पक्षपाती थे..दोनों समाजसुधारक एव युगनिर्माता थे।गरीबी ,भूख एव भौतिक सुख सुविधाओं के अभावो का जो अनुभव जो लोकनायक तुलसीदास के पास था,वह कबीर के पास नही था।डॉ. रामचंद्र शुक्ल ने अपने ग्रंथ 'हिन्दी साहित्य का इतिहास'में कबीर और तुलसी को एक ही समूह में रखा है..लोकहित के खातिर बडी से बडी सत्ता से टकरा जाने का साहस कबीर को अपनें समय का विलक्षण कवि बनाता है। संत तुलसीदास ने 'मानस'की रचना'स्वान्त: सुखाय की थी लेकिन 'सर्वसुखाय'बन गयी।

"स्वारथ के साथिन्ह तज्यो तिजराको-सो टोटक,औच्ट उलटि न हेरो ॥ -"विनयपत्रिका.(1)

तनु जन्यो कुटिल कीट ज्यों तज्यो मातु-पिताहूं।

काहे को रोष-दोष काहि धौं मेरे ही अभाग मोसों सकुचत छुई सब छाहूं। विनयपत्रिका..(2)

तुलसी के इस दैन्य का मुख्य कारण है श्रम से विलगाव। माता-पिता की ओर से मिला परजीविता का संस्कार, जिसे जाति-व्यवस्था में अपने अटूट विश्वास के चलते वे त्याग ही नहीं पाते। कवि होने के कारण बस इतना कर पाते हैं कि जो भौतिक जीवन में जो यातनाभाव लोक के प्रति है, कविता में वह आराध्य के प्रति मुखर होने लगता है। जिसे उन्होंने जैसा परजीवी समाज भक्ति का आदर्श बताने लगता है।

दूसरी ओर कबीर हैं। जन्म उनका भी अज्ञात कुल में हुआ था। माता-पिता हिंदू थे या मुसलमान, कभी इसे लेकर चिंता में नहीं पड़े। लालन-पोषण एक श्रम-शील आजीविक परिवार में हुआ था। सो अपने ही श्रम के भरोसे जीना, मेहनत करके खाना, उन्हें संस्कार में मिला। एक मेहनतकश किसान, मजदूर या शिल्पकार की तरह कबीर का हृदय भी साफ है। आत्मविश्वास से भरा हुआ। वे करघा चलाते-चलाते कविता रचते थे। उनके चारों ओर अपना समाज था, जिसका वे भला चाहते थे। इसलिए उनकी कविता में न तो किसी प्रकार का दैन्य झलकता है न ही परिताप की भावना। भावना के वशीभूत होकर कभी-कभार खुद को राम की बहुरिया भी कह जाते हैं। लेकिन जब उनका स्वाभिमान हुंकारता है तो उसे भी आड़े हाथ लेने लगते हैं—

हम बहनोई राम मोर सारा, हमहि बाप हरि पुत्र हमारा

कुल मिलाकर भक्ति के आवरण तले तुलसी नाम रटने तक सीमित हो जाते हैं, वहीं, कबीर की सतई उन्हें ज्ञान के स्वागत को सदैव तत्पर रहती है— संतो भई आई ग्यान की आंधीकबीर एक मत साधक थे।अपने आध्यात्मिक अनुभव के बल पर ही उन्होंने सत के स्वरूप का उद्घाटन किया है।उनके 'राम' निर्गुण राम (ब्रह्म) है, आत्माराम है। कबीर के राम निराकार है (निर्गुण राम)तुलसी के राम साकार है (सगुण राम)

तुलसी के राम मर्यादा पुरूषोत्तम हैं और हर तरह के आदर्श के प्रतिरूप है। आदर्श पुत्र,आदर्श शिष्य,आदर्श मित्र, आदर्श भ्राता और सबसे अधिक आदर्श पति और फिर आदर्श शासक।

निरगुन तें एहि भांति बड़, नाम प्रभाउ अपार।
कहेउँ नामु बड़ राम तें, निज बिचार अनुसार।।

कबीर के राम : जिस समय कबीर का समाज मे प्रादुर्भाव हुआ ,उस समय समाज के विभिन्न संप्रदायों में विभिन्न प्रकार की कुरीतियाँ जैसे मूर्तिपूजा ,बहुदेववाद आदि व्याप्त थी ,जिसे दूर करने के लिए उन्होंने अदृश्य ईश्वर को 'राम' का नाम दिया ताकि सामाजिक लोगों को उन्हीं की भाषा में सही मार्ग पर लाया जा सके। कबीर ने कई बार 'राम' शब्द का अपने पदों में प्रयोग किया है , उनका 'राम' 'दशरथी राम' न होकर परम् ब्रह्म का प्रतीक है क्योंकि वे नाम को ,रूप की अपेक्षा अधिक महत्व देते थे। इसलिए कबीर के 'राम' ,नाम साधना के प्रतीक है। कबीर ने राम यानी ईश्वर के नाम का सहारा लेकर समाज-सुधार का प्रयास किया।

तुलसी के राम : तुलसी के राम आराध्य थे और वे स्वयं को सेवक मानते थे तथा राम की चरणों में रहना अपना सौभाग्य समझते थे। अधर्म का विनाश कर सकते है यानी राम एक प्रकार से गोस्वामी तुलसी के मार्गदर्शक हुए और समाज के नायक या समाजसुधारक। तुलसीदास के राम उत्तर भारत में घर-घर का बड़ा और आज्ञाकारी बेटा, आदर्श राजा और सौम्य पति तक बन जाता है कबीर लोकमंगल की कामना करते हुए कहते है कि इस संसार में आकर कबीर अपने जीवन में बस यही चाहते हैं कि भला हो संसार में यदि किसी से दोस्ती नही तो दुश्मनी भी नही। उनके दोहे आजके समय में भी उतनी ही सार्थकता दिखाते है जितने कबीर के समय में थे।"ना काहू सों दोस्ती , न काहू सो बैर।। "(३)

मध्ययुग में कबीर और संतों की वाणी ने जो अलख जगाया वह आज भी उतना ही महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है जितना तत्कालीन युग में था. कबीर अपने युग की उपज हैं। युगीन परिस्थितियों एवं समय की मांग ने उनके व्यक्तित्व को गढ़ा। वे सारग्राही महात्मा थे। जिन्होंने अपने समय में प्रचलित सभी मत-मतांतरों के सार को ग्रहण किया। उन्हें अपने तर्क और अनुभव की कसौटी पर कसा, जो विश्वास, मान्यताएँ, मानवता, नैतिकता एवं भक्ति की राह में व्यर्थ बाधक थे उनका विरोध किया। कबीर सच्चे भक्त होने के साथ प्रखर, तेजस्वी, स्पष्टवक्ता, साहसी, निर्भीक, निरभिमानी, विनय, सह, परदुःखकातर आदि गुणों के धनी थे। सामाजिक कुरीतियों, रूढ़ियों-आडंबरों, दुराचार, पाखंडादि का जैसा तीव्र विरोध उनमें देखा जाता है, वह अद्वितीय है। मध्ययुग मुगलों के आक्रमणों, धर्मांतरण, देशी राजाओं की विलासीता ,अंधविश्वासों एवं कुरीतियों का युग था। हताश-निराश जनता मंत्र, योग, जात-पात, छुआछूत, सामंतशाही, दमन-शोषण से त्रस्त थी। समाज नैतिक पतन के गहरे गर्त में गिर रहा था। ऐसे में संत कवियों ने समय की नस को पकड़ा। उन्होंने जो कहा अपने अनुभव से कहा। जो देखा, भोगा और सहा उसी की काव्यात्मक अभिव्यक्ति कबीर की वाणी है।

Scanned with OKEN Scanner

अतः कबीर के समता, स्वतंत्रता और भ्रातृत्व गढ़ने के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं। जिन मानवीय मूल्यों की स्थापना हेतु वे जीवनभर संघर्षरत रहे, उस संघर्ष की लौ को फिर से जीवित रखने की आवश्यकता आ पड़ी है। प्रेम, मानवता, सद्भाव, सौहार्द और नैतिकता की बहाली के लिए कबीर के विचारों का पुनः अनुसरण समय की माँग है।

भारतीय महापुरुषों में अग्रगण्य गोस्वामी तुलसीदास भारतीय समाज और संस्कृति के जहाँ एक ओर उन्नायक हैं वहीं दूसरी ओर सुधारक भी है। तत्कालीन समाज में व्याप्त विसंगतियों, कुरीतियों, ऊँच-नीच, छुआछूत जाति-पाँति के भेदभाव को दूर करके तुलसीदास ने एक स्वस्थ समाज की स्थापना की। तुलसी के युग में जनता मुगलों के शोषण और आतंक से भयभीत थी। समाज में फैली विकृतियाँ, विसंगतियाँ, नैतिक विडम्बनाएँ यथा-ढोंग, पाखण्ड और कर्मकांड की जड़ता से सामाजिक संबंधों का पतन हो रहा था। भारतीय समाज रूढ़ियों और धार्मिक बेड़ियों में जकड़ गया था। इन परिस्थितियों का तुलसीदास ने डटकर सामना किया और राम जैसे मर्यादित चरित्र से समाज की चेतना को आलोकित किया। तुलसी ने जिस समाज की कल्पना की थी उसे उजागर करते हुए

'तुलसीदास का सारा प्रयास जनता जनार्दन के मानस परिष्कार के लिए था। वह जिस समाज की कल्पना करके चले वह स्वार्थ-त्याग और बलिदान सिखाने वाला था और उन्होंने जिस राज्य की भावना की थी वह लोकाराधन के लिए राज्य, सुख, राग आदि सबको निछावर कर देने वाला था। उन्होंने राजा और प्रजा के लिए जो आदर्श रखा था वह संक्षेप में प्राचीन वर्ण-व्यवस्था का पुनरुज्जीवक और रामराज्य का प्रस्थापक था। तुलसीदास का साहित्य लोकमंगल, समानता और विश्वबन्धुत्व की भावना पर ही केन्द्रित है। विशेष रूप से रामचरित मानस उनका एक ऐसा महाकाव्य है जो हमारे समाज को प्रतिबिम्बित करता है। इस ग्रंथ में समाज प्रेरणा और मार्गदर्शन दोनों प्राप्त करता है। इनके साहित्य में भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल आदर्शों की अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ ग्रंथ सूचि :

(१) विनय पत्रिका-२७२

(२) विनय पत्रिका-२७५

(३) श्यामसुंदर दास -कबीर ग्रंथावली

(४) जीवनसिंह ठाकुर : 'मनवीय चेतना की मुख्य धारा और कबीर

(५) हिंदी साहित्य का इतिहास – आ. रामचंद्र शुक्ल

HRDC/2122/GD6/81

2

ज्ञान-विज्ञान विमुक्तये

UNIVERSITY GRANTS COMMISSION
HUMAN RESOURCE DEVELOPMENT CENTRE (HRDC)
GUJARAT UNIVERSITY, AHMEDABAD-380009
UGC - SPONSORED GURU-DAKSHTA:FACULTY INDUCTION PROGRAMME (FIP)

This is to certify that

Dr. Manisha Ram Bhai Jogiya **Assistant Professor**

Government Arts & Commerce College, Khergam, Navsari

affiliated to Veer Narmad South Gujarat University participated in the 6th Online Guru-Dakshta, Faculty Induction Programmes (FIP) of 30 days (Equivalent to Orientation Programme) from 12/07/2021 to 10/08/2021 and obtained Grade A.

Professor-Director
UGC-HRDC

Course
Coordinators

Vice-Chancellor/Registrar
Gujarat University

Scanned with OKEN Scanner